अष्टम माला, खंड 29, अंक 51

सोमवार, 27 जुलाई, 1987
5 श्रावण, 1909 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

का

हिन्दी संस्करण

आठवां सत्र—दूसरा भाग

(आठवीं लोक सभा)

(खंड 29 में अंक 51 से 60 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

[अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी । उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा ।]

विषय–सूची

अष्टम माला, खंड 29, आठवां सत्र-दूसरा भाग, 1987/1909 (शक)

अंक 51, सोमवार 27 जुलाई, 1987 5 श्रावण, 1909 (शक)

विषय	पृष्ठ
सदस्य द्वारा शपथ ग्रहण	1
निधन संबंधी उल्लेख	1—15

लोक सभा

सोमवार, 27 जुलाई, 1987/5 श्रावण, 1909 (शक)

लोक सभा 11 बजे म० पू० समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

सदस्य द्वारा शपथ ग्रहण

श्री हरद्वारीलाल (रोहतक)

निधन संबंधी उल्लेख

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : सभा की पिछली बैठक के बाद संक्षिप्त अंतराल में हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री, श्री चरण सिंह, जिनको लोग प्यार से चौधरी साहब पुकारते थे, की मृत्यु से देश को भारी नुकसान हुआ है। मुझे दस अन्य भूतपूर्व साथियों अर्थात सर्वश्री बंशी दास धनगर, पैंडी लक्ष्मैया, गणेश सदाशिव अल्टेकर, आर० अच्युतन, सरदार मंगल सिंह, प्रो० निवारण चन्द्र लास्कर, सर्वश्री पी० पार्थसारथी, द्वारका दास मंत्री, धन्ना सिंह गुलशन और बृज लाल वर्मा के निधन के बारे में सभा को सूचित करना भी मेरा एक दु:खद दायित्व है।

श्री चरण सिंह का जन्म एक गरीब किसान परिवार में हुआ। उन्होंने देश की, विशेष रूप से देहातों के गरीब लोगों की, दीर्घकाल तक सेवा की। चौधरी साहब उस पीढ़ी से संबंधित थे जिसने स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया और अन्तत: स्वाधीनता प्राप्त की। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा और बाद में विदेशी शासन से मुक्ति पाने के पश्चात् उन्हें स्वाधीनता की उपलब्धियों को ठोस रूप प्रदान करने का कार्य सौंपा गया, जिसे उन्होंने आजीवन गांधी जी की परम्पराओं के अनुरूप पूरा करने का प्रयास किया।

चौधरी साहब ने अपने जीवन के तीसरे दशक में ही अपना राजनीतिक जीवन आरंभ कर दिया था। पहली बार चौधरी साहब 1937 में उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और 1939 तक वह इस सभा के सदस्य बने रहे। 1946 में वह पुन: राज्य की विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए और अगले 31 वर्षों तक अर्थात 1977 तक लगातार इसके सदस्य रहे। अप्रैल, 1967 में मुख्य मंत्री के उच्च पद पर आसीन होने से पूर्व वह राज्य मंत्रिमण्डल के सदस्य

रहे और केवल 17 महीनों की छोटी सी अवधि को छोड़कर, 1951-67 के बीच 16 वर्षों तक उन्होंने महत्वपूर्ण विभाग संभाले। इससे पूर्व 1946 से 1957 तक उन्होंने राज्य में संसदीय सचिव के रूप में कार्य किया। 1971-77 के दौरान वह राज्य विधान सभा में विपक्ष के नेता रहे।

श्री चरण सिंह लोक सभा के लिए पहली बार 1977 में निर्वाचित हुए। वह 26 मार्च, 1977 से 30 जून, 1978 तक केन्द्रीय गृह मंत्री रहे और जनवरी, 1979 में उन्हें उप प्रधान मंत्री और वित्त मंत्री का कार्यभार सौंपा गया। अन्ततः 28 जुलाई, 1979 को उन्होंने प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की और 14 जनवरी, 1980 तक उन्होंने इस पद को संभाला।

चौधरी साहब जिस किसी पद पर भी रहीं उन्होंने अपने को एक योग्य प्रशासक सिद्ध किया और अपनी स्पष्टवादिता तथा सादगी का चिरस्थायी प्रभाव छोड़ा।

उन्होंने अपना सारा जीवन कृषि सुधार और भारत के ग्रामीण लोगों की दशा को सुधारने में लगा दिया और वह किसानों के कल्याण के लिए अथक रूप से कार्य करते रहे। उत्तर प्रदेश जमींदारी उन्मूलन विधेयक लाने का श्रेय अधिकतर चौधरी साहब को ही जाता है। इस विधेयक के कारण देश के अन्य भागों में भी भूमि सुधार संबंधी कार्यों को गति प्राप्त हुई। उप-काश्तकारों और कृषि मजदूरों को भी शोषण से मुक्त करने के लिए इस विधेयक द्वारा स्थायी अधिकार दिये गये। इस उपाय द्वारा हरिजनों को बिना कोई अदायगी किये फालतू पड़ी भूमि प्राप्त करने का अधिकार भी मिल गया।

श्री चरणसिंह को 29 नवम्बर, 1985को पक्षाघात हो गया और इस बीमारी से वह कभी उभर न पाये अन्ततः 29 मई, 1987 को 85 वर्ष की आयु में वह हमसे जुदा हो गये। उनकी मृत्यु से देश ने एक महान देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानी और योग्य प्रशासक खो दिया। श्रीचरणसिंह ने कृषि और कुटीर उद्योगों का सदैव पक्ष लिया। उनके विचारानुसार ये उद्योग गांधीवादी अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी थे। देश के सच्चे सपूत के रूप में चौधरी साहब को देश के मेहनती किसानों की आजीवन सेवा करने के लिए बहुत दिनों तक याद रखा जायेगा।

श्री बंसी दास धनगर 1957-62 तक दूसरी लोक सभा सदस्य रहे। उन्होंने उत्तर प्रदेश के मैनपुरी निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। इससे पूर्व 1952-57 तक वह उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे।

एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में श्री धनगर ने सामाजिक विषमताओं और असमानताओं को दूर करने और समतावादी समाज की स्थापना के लिए कार्य किया। व्यवसाय से अध्यापक श्री धनगर 1952-54 तक हिन्दी मासिक पत्रिका के सम्पादक भी रहे।

श्री धनगर का 18 अप्रैल, 1987 को इटावा में निधन हो गया।

श्री पैडी लक्ष्मैया 1952-57 तक पहली लोक सभा के सदस्य थे और उन्होंने भूतपूर्व मद्रास राज्य के अनन्तपुर निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

व्यवसाय से वकील, श्री लक्ष्मैया अनेक सामाजिक संगठनों में विभिन्न पदों पर रहे। वह एक प्रसिद्ध शिक्षाविद् थे और उन्होंने अनेक नाटकों की रचना की। उन्हें बहुत से सम्मान प्राप्त हुए।

श्री लक्ष्मैया का 28 अप्रैल, 1987 को 83 वर्ष की आयु में हैदराबाद में निधन हो गया।

श्री गणेश सदाशिव अल्टेकर 1952-57 तक पहली लोक सभा के सदस्य रहे। उन्होंने तत्कालीन बम्बई राज्य के उत्तरी सतारा निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री अल्टेकर ने स्वतन्त्रता संघर्ष में सक्रिय रूप से भाग लिया और कई बार जेल गए। एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता श्री अल्टेकर ने अनेक सामाजिक और शैक्षणिक संगठनों में विभिन्न पदों पर कार्य किया। व्यवसाय से वकील होते हुए भी वह कला, दर्शन, समाज विज्ञान, राजनीति और अर्थशास्त्र में रुचि रखते थे और मराठी पत्रिकाओं में उन्होंने इन विषयों पर अनेक निबंध लेख लिखे।

श्री अल्टेकर का 15 मई, 1987 को 92 वर्ष की आयु में सतारा में निधन हो गया।

श्री आर० अच्युतन 1962-67 तक तीसरी लोक सभा के सदस्य थे और उन्होंने केरल के मवेलीकरा निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। इससे पूर्व वह तत्कालीन ट्रावनकोर-कोचीन विधान सभा के 1948-52 तक सदस्य रहे।

एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में श्री अच्युतन ने समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए कार्य किया। उन्होंने सहकारिता आन्दोलन और शिक्षा के प्रसार कार्य में सक्रिय रूप से भाग लिया।

श्री अच्युतन का 71 वर्ष की आयु में 9 जून, 1987 को कोट्टायम में निधन हो गया।

सरदार मंगल सिंह 1934-46 के दौरान तत्कालीन पूर्वी पंजाब से केन्द्रीय विधान सभा के सदस्य थे।

एक वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, सरदार मंगल सिंह महात्मा गांधी के आह्वान पर राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए स्वतन्त्रता संघर्ष में कूद पड़े और उन्होंने असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए सरकारी नौकरी छोड़ दी। स्वतन्त्रता संघर्ष में भाग लेने के लिए उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा।

वह एक विद्वान संसदविज्ञ थे तथा उस नेहरू समिति के सदस्य थे जिसने 1928 में भारत के लिए संविधान का पहला प्रारूप तैयार किया। 1946 में भारत सरकार द्वारा स्थापित किए गए वेतन आयोग के भी वह सदस्य थे।

सरदार मंगल सिंह का 20 जून, 1987 को 95 की आयु में चण्डीगढ़ में निधन हो गया।

प्रो० निवारण चन्द्र लास्कर 1957-61 तक दूसरी लोक सभा के सदस्य रहे और उन्होंने असम के कछार निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। इससे पूर्व 1947-50 तक और 1952-57 तक वह क्रमशः संविधान सभा और पहली लोक सभा के सदस्य रहे। वह 1950-52 तक असम विधान सभा के सदस्य भी रहे।

एक प्रसिद्ध सासद श्री लास्कर ने सभा की कार्यवाहियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने 1955-57 के दौरान लोक लेखा समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया। वह 1951-52 के दौरान असम में राज्य मंत्रिमण्डल के सदस्य भी रहे।

विख्यात शिक्षाविद श्री लास्कर 10 वर्षों तक संस्कृत और बंगाली के वरिष्ठ प्रोफेसर भी रहे। एक निष्ठावान सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री लास्कर ने अनेक सामाजिक संगठनों में विभिन्द्र पदों पर कार्य किया। उन्होंने अस्पृश्यता दूर करने के लिए चलाए गए आन्दोलन में गहरी रुचि ली और समाज के दुर्बल वर्गो के कल्याण के लिए बहुत कार्य किया। उन्होंने शरणार्थियों के पुनर्वास सम्बन्धी कार्यों में भी सक्रिय योगदान किया। वह 1949 से 1952 तक अखिल भारतीय कुटीर बोर्ड उद्योग और 1950-52 तक खाद्य और कृषि संगठन के सदस्य भी रहे।

प्रो० निवारण चन्द्र लास्कर का 25 जून, 1987 को 80 वष की आयु में सिल्वर में निधन हो गया।

श्री पी० पार्थसारथी 1980-84 तक सातवीं लोक सभा के सदस्य रहे और उन्होंने आंध्र प्रदेश के राजमपेट निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। वह 1967-70, 1971-77 और 1977-79 के दौरान क्रमशः चौथी, पांचवीं और छठी लोक सभा के सदस्य रहे। इससे पहले, वह 1955-62 तक आंध्र प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे।

व्यवसाय से एक कृषक श्री पार्थसारथी कुशल संसदविज्ञ थे। उन्होंने 1970-71 तक केन्द्र में संसदीय कार्य मंत्रालय में उप मंत्री का पदभार संभाला। वह कई संसदीय समितियों से भी सम्बद्ध रहे। उन्होंने देश-विदेश की यात्रा की और 1970 में दिल्ली तथा कैन्वरा में हुए अन्तर-संसदीय सम्मेलन और काहिरा में हुए विश्व संसदविज्ञ सम्मेलन में भाग लिया। वह 1974 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रतिनिधि रहे।

श्री पार्थसारथी का निधन 71 वर्ष की आयु में 4 जुलाई, 1987 को कोदूर में हुआ।

श्री द्वारकादास मंत्री महाराष्ट्र के भीड़ चुनाव क्षेत्र से 1962-67 के दौरान तीसरी लोक सभा के सदस्य रहे। एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता होने के नाते श्री द्वारका दास मन्त्री कई सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक संगठनों से विभिन्न क्षमताओं में सम्बद्ध रहे। उन्होंने शिक्षा के प्रसार और सहकारिता आन्दोलन के प्रसार में गहरी रुचि ली।

एक अधिवक्ता होने के नाते, वह एक योग्य सांसद विज्ञ थे। उन्होंने लोक सभा की प्राक्कलन समिति के सदस्य के रूप में भी काम किया।

श्री द्वारका दास मन्त्री का निधन 61 वर्ष की आयु में 11 जुलाई, 1987 को भीड़ में हुआ।

श्री धन्ना सिंह गुलशन पंजाब के भटिण्डा चुनाव क्षेत्र से 1977-79 के दौरान छठी लोक सभा के सदस्य रहे। वह 1962-67 के दौरान तीसरी लोक सभा के भी सदस्य रहे। इससे पूर्व, वह 1952-57 और 1957-62 के दौरान क्रमशः भूतपूर्व पेप्सू विधान सभा और पंजाब विधान सभा के सदस्य रहे।

एक वयोवृद्ध सांसद और एक सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री गुलशन 1977-79 के दौरान केन्द्रीय मंत्रिपरिषद के सदस्य रहे। उन्होंने पंजाब राज्य की लोक लेखा समिति में भी काम किया। वह एक वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी थे और स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के कारण वह कई बार जेल गये।

वह पेशे से एक कृषक तथा एक समर्पित सामाजिक कार्यकर्त्ता थे और उन्होंने पददलितों के कल्याण में सक्रिय भाग लिया। वह कई सामाजिक और शैक्षिक संगठनों से भी सम्बद्ध रहे। वह कविता और खेलकूद में विशेष रुचि रखते थे।

श्री गुलशन का निधन 14 जुलाई, 1987 को भटिण्डा में हुआ।

श्री बृज लाल वर्मा मध्य पदेश के महासमुंद क्षेत्र से 1977-79 के दौरान छठी लोक सभा के सदस्य रहे। इससे पूर्व वह एक छोटी सी अवधि को छोड़कर 1952-72 के दौरान मध्य प्रदेश राज्य विधान सभा के सदस्य रहे।

एक कुशल सांसद विज्ञ होने के नाते श्री वर्मा केन्द्र सरकार में केबिनेट मंत्री रहे। उन्होंने 1967-69 के दौरान मध्य प्रदेश में भी मंत्री के रूप में काम किया। एक वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी के नाते उन्होंने स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लिया और जेल गये।

पेशे से एक किसान होने के नाते श्री वर्मा सहकारी और किसान आन्दोलनों के प्रसार में गहरी रुचि लेते थे और उन्होंने ग्रामीण विकास के लिये काम किया।

श्री बृज लाल वर्मा का निधन 71 वर्ष की आयु में 19 जुलाई, 1987 को अहमदाबाद में हुआ।

[अनुवाद]

प्रधान मन्त्री (श्री राजीव गांधी) : सभापति महोदय, मैं चौधरी चरणसिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। वे स्वतन्त्रता सेनानी थे। वे अपने चरित्र एवं मान्यताओं की मजबूती के कारण तथा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किए गए एकाग्रचित प्रयासों के कारण उत्तर प्रदेश एवं देश के सर्वोच्च स्थान पर पहुंच सके। उनमें ग्रामीण विकास के प्रति बहुत उत्साह था। उनकी मृत्यु से हम एक देशभक्त तथा उनके जैसे सीधे सादे तथा गूढ़ राजनीतिक से वंचित हो गए हैं।

मैं चाहता हूं कि आप पूरे सदन की ओर से देश तथा उनके शोकसंतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करें। मैं अन्य साथियों के प्रति भी श्रद्धा व्यक्त करता हूं जिनकी मृत्यु पिछले सत्रावसान के पश्चात् हुई है।

श्री सी० माधव रेड्डी (अदिलाबाद) : अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह की मृत्यु के उल्लेख में आपके द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं से मैं सहमत हूं। आपने इन्हें भारतीय कृषकों का नेता ठीक ही कहा है। वे न केवल भारतीय कृषकों के नेता थे बल्कि एक गहन विचारक, एक महान नेता तथा कृषकों के उत्थान के लिए एक महान कार्यकर्ता थे। वे आर्थिक, राजनीति, आयोजना तथा योजना प्राथमिकताओं पर अपने यथार्थवादी विचारों के कारण अनेक अवसरों पर मुश्किलों में पड़े। किंतु वे कभी भी अपने चुने हुए पथ से विचलित नहीं हुए।

महोदय, आपने उन्हें स्पष्टवादी, ईमानदार तथा ऊंचे चरित्र का व्यक्ति ठीक ही बताया है, इस कारण चौधरी चरणसिंह हमारे लिए अनुकरणीय हैं क्योंकि आजकल यह गुण अत्यंत दुलर्भ हैं। आजकल के दिनों में जब हम भ्रष्टाचार तथा सार्वजनिक जीवन में पवित्रता की इतनी बात करते हैं तो चौधरी चरणसिंह के चरित्र का उदाहरण हमारे लिए एक पथ-प्रदर्शक है।

महोदय, एक-एक करके सभी स्वतंत्रता सेनानी तथा राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने वाले मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। उनमें से बहुत कम हमारे बीच रह गए हैं। यही वे महान व्यक्ति हैं

जिन्होंने राष्ट्र को बनाया है, हमें मूल्यों की पहचान कराई है लोकतन्त्र की स्थापना की है और हमें अब लोकतन्त्र की रक्षा करनी है। *ऐसे अवसरों पर जब हम उन्हें याद कर रहे हों, हमें कुछ क्षण* रुककर यह सोचना चाहिए कि क्या हम उन मूल्यों की तथा लोकतन्त्र की भली प्रकार सुरक्षा कर रहे हैं।

मैं अपने दल की ओर से दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री अमल दत्त (डायमंड हारबर) : मैं तथा मेरा दल भारत के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह की मृत्यु पर व्यक्त किए गए दुःख में शरीक हैं।

महोदय, उन्होंने भारत में एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अपनी पहचान बनाई किन्तु उन्होंने अपने लम्बे राजनीतिक जीवन में विभिन्न सरकारी पदों पर अत्यंत ईमानदारी एवं निष्ठा से कार्य किया। देश के सर्वोच्च पद पर रहते हुए भी उन्होंने जो सादा जीवन बिताया वह एक मिसाल बन गया है तथा मेरे विचार में हम सभी को उनके जीवन से सीख लेनी चाहिए। वह ऐसे व्यक्ति थे जो अपनी मान्यताओं के प्रति दृढ़ रहे। उन्होंने देश के आर्थिक विकास, विशेषकर ग्रामीण विकास तथा देश की प्रगति की विचारधारा में अद्वितीय योगदान दिया है। इस दिशा में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उन्हीं रास्तों पर चलकर देश प्रगति कर सकता है। हमें चौधरी चरण सिंह के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और देखना चाहिए कि हम उनके द्वारा राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत किए गए उदाहरण से क्या शिक्षा ले सकते हैं।

मैं अन्य सदस्यों के साथ स्वर्गीय प्रधान मन्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

प्रो० मधु दण्डवते (राजापुर) : महोदय, मैं स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह तथा अन्य महान सांसदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने में आपके तथा अन्य सदस्यों के साथ हूं। अपने जीवन के अन्त में उन्हें मृत्यु से संघर्ष करना पड़ा और अपने अन्त समय में चौधरी चरण सिंह काफी लम्बे समय तक जीवन और मृत्यु के बीच झूलते रहे। सम्भवतः वे इस दुःख के प्रति सचेत नहीं थे किन्तु हम लोग, जो उन्हें देख सकते थे, उनके लिए यह अत्यंत दुःख की बात थी कि चौधरी चरण सिंह जीवन और मृत्यु के बीच झूलते रहे।

जो लोग राजनीतिक तथा अन्य मान्यताओं में हमसे मतभेद रखते हैं उन्हें भी इस बात में कोई संदेह नहीं था कि उनमें ईमानदारी एवं निष्ठा थी जोकि आज महात्मा गांधी के इस देश में समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, जहां पर कि ईमानदारी तथा निष्ठा एक बहुत महान विरासत है। वे उनमें से एक थे जिन्होंने सच्चे गांधीवादी तरीकों से कृषि तथा ग्रामीण विकास को हमारी अर्थव्यवस्था की धुरी बनाने का प्रयत्न किया। वे ऐसे राजनीतिज्ञ थे जिनका हृदय बुढ़ापे में अक्सर बच्चों जैसा हो जाता था। इसमें सन्देह नहीं कि जब कुछ उन्हें कुछ लोग सत्ता में लाए तो वे प्रसन्न हुए थे। किन्तु जब उन्हीं लोगों ने उन्हें सत्ताच्युत किया तो वे एक बच्चे की भांति दुखी हुए थे। तब उन्होंने महसूस किया कि राजनीति में मासूमियत से काम नहीं चलता बल्कि यह सम्भावनाओं का खेल है। महोदय, जहां तक चरणसिंह जी का सम्बन्ध है, वे सदा अपनी गलती मानने को तैयार रहते थे। किसी ने कहा है कि राजनीतिज्ञ वो होता है जो यह बता सके अगले क्षण, अगले दिन' अगले माह या अगले वर्ष क्या होने वाला है और बाद में विश्व को यह बता सके कि यह ऐसा क्यों नहीं हुआ। किन्तु मेरे विचार में चौधरी साहब ने अपनी गलतियों के

सम्बन्ध में स्पष्टीकरण देने का प्रयत्न नहीं किया बल्कि उन्हें सरलता से मान लिया। मेरे विचार में वे किसानों के विरुद्ध शहरी लूट में किसानों के लिए एक प्रेरक शक्ति थे और यही उनका महान योगदान है।

अक्सर प्रेरक प्रशासक से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि प्रशासक बदल सकते हैं उन्हें अधिक जिम्मेदारी सौंपी जा सकती हैं, किन्तु प्रेरक संख्या में बहुत कम होते हैं उन्हें सम्पूर्ण देश को जागृत करना होता है तथा उनमें जागरुकता उत्पन्न करनी होती है। चौधरी चरणसिंह ने देश की ग्रामीण जनता तथा किसानों में यह जागरुकता उत्पन्न की।

अब चौधरी साहब नहीं रहे। परन्तु, मेरे विचार में चौधरी चरणसिंह को सबसे अच्छी श्रद्धांजली यह होगी कि दलगत भावनाओं से ऊपर उठकर हम ग्रामीण निर्धन लोगों के लिए एक जुट होकर कार्य करें। चौधरी चरणसिंह को सबसे अच्छी श्रद्धांजलि यही होगी।

कई अन्य लोग भी हैं हममें से कुछ लोग जिनके सहयोगी थे। मेरे और साथी भी हैं— श्री वर्मा जो जनता शासन में मंत्रिमंडल के सदस्य थे और अन्य अनुभवी सांसद जैसे श्री अटलेकर हैं जो महाराष्ट्र के एक महान सामाजिक कार्यकर्ता थे और जो अपने बहुत से सुधारों के लिए भी प्रसिद्ध हैं।

आज कई सांसदों के नाम निधन सूचना सम्बन्धी सूची में हैं। मैं उन सभी को श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं। महोदय, शोक सन्तप्त परिवारों के सदस्यों को संवेदनायें भेजने में मैं आपके साथ हूं।

डा० एस० जगतरक्षकन (चेंगल पट्टू) : अध्यक्ष महोदय, ए० आई० ए० डी० एम० के० पार्टी की ओर से मैं अपने सहयोगियों के साथ दिवंगत नेताओं को श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं। एक महान देशभक्त और स्वतन्त्रता सेनानी श्री चरणसिंह ग्रामीण निर्धन लोगों, विशेषकर कमजोर तथा दलित वर्गों के हिमायती थे। राष्ट्र कई दशकों तक उनकी राष्ट्र के प्रति और विशेष तौर पर भारतीय किसानों के प्रति महान तथा समर्पित सेवा को याद रखेगा, उनके देहान्त से भारतीय किसानों के क्षेत्र में एक शून्य सा पैदा हो गया है। श्री चरणसिंह जो एक कृषक परिवार से उभरकर आये थे, कृषकों के हिमायती थे। महान नेताओं में से एक श्री चरणसिंह का देहावसान हो गया है। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे।

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुरा) अध्यक्ष महोदय, दिवंगत नेता चौधरी चरणसिंह और कुछ अन्य सहयोगियों को श्रद्धान्जलि अर्पित करने में मैं अपने सहयोगियों और आपके साथ हूं।

महोदय, चरणसिंह जी के साथ कार्य करने का मुझे बहुत कम अवसर मिला था। परन्तु हम अपने जनसाधारण के ज्ञान के जरिए उनके समर्पण ने हमें प्रभावित किया है। राष्ट्रीय जीवन में एक अवसर पर मैंने उनके साथ थोड़ा समय बिताया था जब बागपत में माया त्यागी वाली घटना हुई थी। महोदय आपको याद होगा कि उस समय उन्होंने कृषकों के अलावा हमारी रक्षा, स्त्रियों की रक्षा के लिए दृढ़ रवैया अपनाया था। मैं उनके घर गई थी और उनके जीवन की सादगी से बहुत प्रभावित हुई थी। इसलिए महोदय, इन विशेषताओं के लिए मैं दिवंगत नेता की याद में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

सभी अन्य दिवंगत साथियों को भी मैं अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित करती हूं।

श्री दिनेश गोस्वामी (गुवाहाटी) : अध्यक्ष महोदय, चौधरी साहब तथा अन्य पुराने संसद सदस्यों, जिनका देहांत हो गया है, के बारे में आपने जो भावनायें व्यक्त की हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी ने तथा अन्य विपक्षी नेताओं ने जो भावनायें व्यक्त की हैं मैं उन सभी भावनाओं में शामिल हूं।

भारतीय राजनीति में चौधरी साहब एक विवादास्पद हस्ती थे। परन्तु उस विवाद में व्यक्तिगत रूप से कुछ नहीं था। परन्तु विवाद उनकी धारणा के परिणामस्वरूप था। उन्होंने महसूस किया कि हमारी समस्त योजना प्रक्रिया और आर्थिक नीतियां नगरोन्मुख थीं तथा उनमें ग्रामीण निर्धनों की आवश्यकताओं की झलक नहीं मिलती थी। प्रमाणस्वरूप शहरी सम्भ्रांत वर्ग उसका विरोधी हो गया था परन्तु उन्होंने ग्रामीण लोगों के मन में अपने लिए स्थान बना लिया था।

85 वर्ष की आयु तक उन्होंने एक पूरा जीवन जीया है। एक तरह से शायद, मृत्यु अवश्यभावी है और मनुष्य को इसे धैर्य से स्वीकार करना पड़ता है।

उस पीढ़ी के लोगों के साथ, जो स्वतन्त्रता के लिए लड़े थे तथा जिन्होंने बदले में कुछ भी न पाने की आशा रखकर सब कुछ कुर्बान कर दिया था, हमारा सीधा सम्पर्क दिन-प्रतिदिन धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है।

जहां तक अन्य सदस्यों का समम्बन्ध है श्री निबरन चन्द्र लस्कर के सिवाए, जिन्होंने लम्बे अरसे तक असम के कछार निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था, मुझे उनमें से अधिकांश के सम्पर्क में आने का सौभाग्य नहीं मिला। निस्सन्देह क्षेत्र में उनसे उस समय मिला जब निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए अपने बेटे को छोड़कर उन्होंने राजनीति से सन्यास ले लिया था।

श्री पी. पार्थसारथी यहां संसद में हमारे सहयोगियों में से एक थे। और मुझे उनको संयुक्त राष्ट्र संघ में उनके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जब तक दोनों स्थानापन्न प्रतिनिधियों के रूप में करने जाते थे।

मुझे श्री बृजलाल वर्मा के सम्पर्क में आने का भी सुअवर मिला है।

मैं अपनी पार्टी, संसद में अपने सहयोगियों और अपनी ओर से उन सभी महानुभावों के के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता हूं। मैं आशा करता हूं कि आप हमारी संवेदना शोक-संतप्त परिवारों तक पहुंचा देंगे।

[हिन्दी]

श्री अब्दुल रशीद काबुली (श्रीनगर) : जनाब स्पीकर आप, वजीरे आजम और अपोजीशन रहनुमाओं की तरफ से जो चौधरी चरण सिंह के देहान्त पर और बाकी हमारे बैटरन पार्लियामेंटेरियंस जिनका देहान्त इस मुद्दत में हुआ है, को अपनी तरफ से और जम्मू-कश्मीर नेशनल कांफ्रेंस की तरफ से उन रहनुमाओं को खराजे अकीदत पेश करता है। इसके साथ यह भी कहना चाहूंगा कि चौधरी चरण सिंह की वफात के बाद ऐसा लग रहा है कि मुल्क के अन्दर रफ्ता-रफ्ता वह अजीम बड़े लीडर, बड़े नेता जिन्होंने गांधी जी के पीछे हिन्दुस्तान की आजादी

के लिए बड़े कठिन हालात में कुर्बानियां दीं और मुल्क के अजीम्मुश्शान आदर्शों के लिये, नियमों के लिये, उसूलों के लिये और मुल्क को बनाने के लिये, बड़ी-बड़ी मुसीबतें उठायीं, उनकी रफ्ता-रफ्ता कमी होती जा रही है। लेकिन हमारे जमाने में जो नई जेनरेशन रियासत में आ रही है, मैं उनसे कहना चाहूंगा कि इन बड़े लीडरों को सिर्फ जबानी खराजे अकीदत पेश करने से मकसद पूरा नहीं होगा बल्कि उस जमाने के जो अजीम आदर्शवादी नेता थे, उन्होंने जो बड़े कारनामे किए हैं, खलूस नीयत से हिन्दुस्तान की जो खिदमत की और हिन्दुस्तान की आजादी के लिए जो कुर्बानियां दी हैं, उनको याद करते हुए और उनकी राह पर चलते हुए हमें आगे बढ़ना होगा। ऐसा होने से ही हिन्दुस्तान की सफलता होगी और हिन्दुस्तान की तरक्की होगी।

चौधरी चरण सिंह जो किसानों के नेता रहे, हमारे कश्मीर के साथ उन किसानों की तहरीक का बड़ा दखल रहा है। नेशनल कांफ्रेंस में शेख मोहम्मद अब्दुल्ला की कयादत में जो तहरीक चलायी वह अरबल इलीट के खिलाफ, बड़े-बड़े जागीरदारों के खिलाफ, वह असल में किसानों की तहरीक थी, जिसकी मिसाल नेशनल कांफ्रेंस ने बुलंद की। आज आनरेबल स्पीकर ने यू० पी० जमींदारी एबोल्यूशन एक्ट का जब जिक्र किया तो मुझे याद आया कि गरीब किसानों के नेता ने कोशिश की कि किसानों की बालादस्ती हो। उस समय नेशनल कांफ्रेंस ने 1947 के फौरन बाद मुल्क के अन्दर बड़ी जागीरदारियां खत्म करा दी और किसानों को बिला-मुआवजा जमीन का मालिक बना दिया। मैं ऐसा समझता हूं कि आज के हिन्दुस्तान में इस बात की बड़ी जरूरत है। आज जहां भी बड़ी जागीरदारियां हैं और बड़े-बड़े लैंड-लार्डस हिन्दुस्तान के अन्दर हैं, उन सब को खत्म करना होगा। अगर हम सही तौर पर गांधी जी के रास्ते पर चलना चाहते हैं और चरण सिंह जैसे अजीम नेताओं को सही मायने में खराजे अकीदत पेश करना चाहते हैं तो मैं वजीरे आजम और मुल्क के बड़े नेताओं से यह कहना चाहूंगा कि वह एक ऐसा निजाम बनाने की कोशिश करें जिससे सही मायने में समाजवाद आये और देश में किसानों के ऊपर जो आज भी अत्याचार हो रहा है, उसका खात्मा हो, जागीरदारियां खत्म हों और जो सरमायेदाराना निजाम इस मुल्क में मुसल्लत हो रहा है, उसके खात्मे के लिए हम दिलो-जान से कोशिश करें।

मैं एक बार फिर नेशनल कांफ्रेंस की तरफ से, अपनी तरफ से चौधरी चरण सिंह और बड़े वैटरन पालियामेंटेरियन्स जिन्होंने मुल्क की बड़ी सेवा की है, को खराजे अकीदत पेश करता हूं।

شری عبدالرشید کابلی (سرینگر)

جناب اسپیکر صاحب وزیراعظم اور اپوزیشن رہنماؤں کی طرف سے چودھری چرن سنگھ کے دیہانت پر اور باقی ہمارے وڈیرن پارلیمنٹرینیڈس جن کا دیہانت اس مدت میں ہوا ہے کو اپنی طرف سے اور جموں کشمیر نیشنل کانفرنس کی طرف سے ان رہنماؤں کو خراج عقیدت پیش کرتا ہے۔ اس کے ساتھ یہ بھی کہنا چاہوں گا کہ چودھری چرن سنگھ کی وفات کے بعد ایسا لگ رہا ہے کہ ملک کے اندر رفتہ رفتہ وہ عظیم بڑے لیڈر بڑے نیتا جنھوں نے گاندھی جی کے پیچھے ہندوستان کی آزادی کے لئے بڑے کٹھن حالات میں قربانیاں اور ملک کے عظیم آدرشوں کے لئے نیموں کے لئے اصولوں کے لئے اور ملک کو بنانے کے لئے بڑی بڑی مصیبتوں کا سامنا کیا۔ ان کی رفتہ رفتہ کمی ہوتی جا رہی ہے۔ لیکن ہمارے زمانے میں جو نئی جنریشن سیاست میں آ رہی ہے۔ میں ان سے کہنا چاہوں گا کہ ان بڑے لیڈروں کو صرف زبان سے خراج عقیدت پیش کرنے سے مقصد پورا نہیں ہوگا۔ اس زمانے کے جو عظیم آدرش وادی نیتا تھے۔ انہوں نے جو بڑے کارنامے کئے ہیں۔ جو خلوص نیت سے ہندوستان کی جو خدمت کی ہے اور ہندوستان کی آزادی کے لئے جو قربانیاں دی ہیں اِن کو یاد کرتے ہوئے اور ان کی راہ پر چلتے ہوئے ہمیں آگے بڑھنا ہوگا۔ ایسا ہونے سے ہی ہندوستان کی سلیتقا ہو گی اور ہندوستان کی ترقی ہو گی۔

چودھری چرن سنگھ جو کسانوں کے نیتا رہے ہمارے کشمیر کے ساتھ اِن کسانوں کی تحریک کا بڑا دخل رہا ہے۔ نیشنل کانفرنس میں شیخ محمد عبداللہ کی قیادت میں جو تحریک چلائی وہ اربل الینٹ کے خلاف بڑے بڑے جاگیرداروں کے خلاف وہ اصل میں کسانوں کی تحریک تھی جس کی مثال

نیشنل کانفرنس نے بلند کی آج آنریبل اسپیکر نے یوپی زمینداری ایبالیوشن ایکٹ کا جو ذکر کیا تو مجھے یاد آیا کہ غریب کسانوں کے نیتا نے کوشش کی کہ کسانوں کی بالا دستی ہو۔ اس سمے نیشنل کانفرنس نے ۱۹۴۷ء کے فوراً بعد ملک کے اندر بڑی جاگیر داریاں ختم کرادیں اور کسانوں کو بلا معاوضہ زمین کا مالک بنا دیا۔ میں ایسا سمجھتا ہوں کہ آج کے ہندوستان میں اس بات کی بڑی ضرورت ہے۔ آج جہاں بھی بڑی جاگیر داریاں ہیں اور بڑے بڑے لینڈ لارڈس ہندوستان کے اندر ہیں۔ ان سب کو ختم کرنا ہوگا۔ اگر ہم صحیح طور پر گاندھی جی کے راستے پر چلنا چاہتے ہیں اور چرن سنگھ جیسے عظیم نیتاؤں کو صحیح معنی میں خراج عقیدت پیش کرنا چاہتے ہیں تو میں وزیر اعظم اور ملک کے بڑے نیتاؤں سے یہ کہنا چاہوں گے کہ وہ ایک ایسا نظام بنانے کی کوشش کریں۔ جس سے صحیح معنی میں سماج وادآئے اور دیش میں کسانوں کے اوپر جو آج بھی اتیاچار ہو رہا ہے اس کا خاتمہ ہو۔ جاگیر داریاں ختم ہوں اور جو سرمایہ دارانہ نظام اس ملک میں ہو رہا ہے اس کے خاتمے کے لئے ہم دل وجان سے کوشش کریں۔

میں ایک بار پھر نیشنل کانفرنس کی طرف سے اپنی اپنی طرف سے چودھری چرن سنگھ اور بڑے ویٹرن پارلیمنٹیرینڈس جنھوں نے ملک کی بڑی سیوا کی ہے کو خراج عقیدت پیش کرتا ہوں۔

श्री मोहम्मद महफूज अली खां (एटा) : जनाब स्पीकर साहब, मैं चौधरी चरण सिंह के इंतकाल के सिलसिले में सिर्फ दो अशार पढ़ना चाहता हूं, वैसे तो उनके लिए बहुत कुछ कहा जा सकता है। चौधरी साहब एक गरीब खानदान में पैदा हुए, मकान टूटा हुआ और मकान के ऊपर छप्पर पड़ा हुआ। ऐसे शख्स ने सियासत के अन्दर कदम रखा, आप अन्दाजा लगाइये कि उसके खयालात क्या होंगे। यह हकीकत है कि वे किसानों के मसीहा थे, गरीबों के हमदर्द थे, बैकवर्ड क्लास के लीडर थे और उन्होंने जो कुछ भी सोचा, वह गरीबों के लिए सोचा, देहातों के लिए सोचा। आज हमारी 80 फीसदी पब्लिक देहात में रहती है, उसी नजरिए से उन्होंने अपनी सियासत को चलाया : इसमें कोई दो रायें नहीं कि चौधरी चरण सिंह साहब बड़े ही ईमानदार, बड़े मजबूत, बड़ी हिम्मत वाले थे और जो तय कर देते थेउसको वे पूरा करते थे। जिद्दी भी थे—इसमें कोई शक नहीं है। जो फैक्ट है उसको कहा जायेगा। चौधरी साहब जो तय कर देते थे उसमें किसी और की मानते नहीं थे। इसमें कोई शक नहीं कि चौधरी साहब ने जो अपना जमाना गुजारा—यू० पी० के दो मर्तबा चीफ मिनिस्टर रहे और हिन्दुस्तान के प्राइम मिनिस्टर रहे, कौम की उन्होंने खिदमत की, असली मायने में गांधीवादी वही थे। मैं यही गुजारिश करूंगा कि उनकी लाइफ और उनकी हिस्ट्री को मद्देनजर रखें, आजकल के पालिटीशियन उनके नक्शे कदम पर चलें।

जो और लोग हमारे दर्मियान नहीं रहे हैं, जिनके नाम स्पीकर साहब ने लिए हैं, चूंकि मैं नया आदमी हूं मैं नहीं जानता उन लोगों को, एक्स मेम्बरान को, उनके लिए भी हमारे यही अल्फाज हैं।

आखिर में मैं दो अशार पेश करता हूं :

आज लेकिन हमनवां सारा चमन मातम में है,
शमे रोशन बुझ गई, बज्मे सियासत मातम में है।

दूसरा शेर जिगर का है :

जिगर, राहे वफा में नक्श ऐसे छोड़ आया हूं,
कि दुनिया देखती है और मुझको याद करती है।

[अनुवाद]

श्री इब्राहीम सुलेमान सेठ (मंजेरी):अध्यक्ष महोदय, मैं चौधरी चरणसिंह साहिब के दुःखद निधन पर आप द्वारा व प्रधान मंत्री और अन्य नेताओं द्वारा व्यक्त विचारों से अपने को संबद्ध करने के लिए, खड़ा हुआ हूं।

चौधरी साहिब भारत के महान् सपूत थे और उनके निधन से देश को अपार क्षति हुई है। उन्होंने विभिन्न पदों पर रहकर देश की सेवा की। वे उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री केन्द्र में गृह मंत्री व वित्त मंत्री और देश के प्रधान मंत्री रहे। वे बड़े ईमानदार और सरल व्यक्ति थे और आम लोगों विशेषकर पद्दलित और किसानों के नेता थे। मैं आपके माध्यम से उनके निधन पर उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। इसी प्रकार विभिन्न अवधियों में जो संसद में हमारी साथी रहे, उन सबके निधन पर भी मैं अपनी हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। इन लोगों

ने देश की बहुत सेवा की है। मैं इन सब के परिवारों के प्रति अपनी ओर से, अपने दल भारतीय मुस्लिम लीग की तरफ से संवेदनाएं व्यक्त करता हूं।

श्री अमर राय प्रधान (कूच बिहार) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल, फारवर्ड ब्लाक की ओर से चौधरी चरण सिंह और अन्य पुराने अनुभवी संसद सदस्यों के निधन पर संवेदना व्यक्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, हमारे राजनीतिक और आर्थिक विचार चौधरी चरण सिंह के विचारों से मेल नहीं खाते थे और हम उनकी भूमि सुधार संबंधी नीति के विरुद्ध थे। किन्तु हम चौधरी साहिब की इस बात के लिए तारीफ करते हैं कि उन्होंने कृषि उत्पाद का लाभप्रद मूल्य दिलवाने के लिए अपनी लड़ाई निरंतर जारी रखी। और यह चौधरी साहिब ही थे जों सोचते थे कि कृषि उत्पाद और औद्योगिक उत्पाद के मूल्यों में कुछ समानता होनी चाहिए। हम शोकसतंप्त परिवारों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हैं।

श्री आर्ज जोसेफ मुंडाकल (मुवत्तुपुझा) : इस सभा और हमारे प्रिय प्रधान मंत्री द्वारा चौधरी चरण सिंह और देश के अन्य नेताओं के निधन पर व्यक्त भावनाओं में मैं भी पूरी तरह सम्मिलित हूं। चौधरी साहिब के निधन से एक महान गांधीवादी हमारे बीच से उठ गया है, जो एक बड़ा ईमानदार प्रशासक तथा देश के किसानों का सच्चा मित्र था। जब वह सत्ता में थे तो उन्होंने किसानों, विशेषकर हमारे देश के ग्रामीण निर्धनों की काफी सेवा की और हमारे देश के विकास में महान योगदान दिया। हम यह नहीं भूल सकते कि हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है वह एक किसान के घर पैदा हुए और किसानों/काश्तकारों के हितों के लिए ही लड़ते रहे। अतः चौधरी साहिब के निधन पर मैं अपनी हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। केरल के श्री आर० अच्युतन के दुःखद निधन पर भी अपनी हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। वह एक महान गांधीवादी थे और उन्होंने देश की बड़ी सेवा की।

श्री बलवंत सिंह रामूवालिया (संगरूर) : अपने दल की ओर से, मैं चौधरी चरण सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। वह अपने पूरे जीवन में गांधीवादी रहे और उन्होंने ग्रामीण विकास और किसानों की उन्नति के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया।

मैं सरदार मंगल सिंह को भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, जो कि न केवल बड़े सरकारी पदों पर ही रहे बल्कि नेहरू जी और गांधीजी के साथ स्वाधीनता-संग्राम में भी हिस्सा लिया।

मैं श्री धन्नासिंह गुलशन को भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

[हिन्दी]

श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसी (हैदराबाद): स्पीकर साहब, एवान में जो ताजियति करारदार साबिक वजीरेआजम चौधरी चरण सिंह का ताजियत के लिए पेश की गई है। मैं और मेरी पार्टी की ओर से, हिन्दुस्तान की आजादी और जद्दोजहद का एक बुजुर्ग सिपाही आज हम से महरूम हो गया है। मैं उस ताल्लुक से तमाम एवान के ख्यालात के साथ अपने आपको जोड़ता हूं और उनके पसमान्दगान के साथ अपने आपको भी शामिल करता हूं।

श्री बलराम सिंह यादव : अध्यक्ष महोदय, निधन संबंधी उल्लेख में क्रम संख्या दो पर सदस्य का नाम श्री बंसी दास धानगर गलत लिया हुआ है। सही नाम श्री बंसीधर धानगर है।

अध्यक्ष महोदय : देख लेंगे। श्री सी० जंगा रेड्डी।

श्री सी० जंगा रेड्डी (हनमकोंडा) : स्पीकर साहब, सदन में आज चौधरी चरण सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है उनके प्रति मेरी पार्टी और मैं श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं चौधरी चरण सिंह जो करना चाहते थे, वह उन्होंने जनता पार्टी के समय में करके दिखलाया है। 1967 में गैर-कांग्रेसी सरकार उनके दलबदल से शुरू हो गई और 1980 में फिर उनके कारण ही गैर-कांग्रेसी सरकार केन्द्र में टूटी और कांग्रेसी सरकार शुरू हो गई। किसान होने के कारण, किसान की सेवा करने की दृष्टि से, वे अपने आपको पावर में लाना चाहते थे। इसलिए जितने भी उन्होंने दलबदल किए, केवल किसानों के हित में ही किए हैं। इस प्रकार माना जाता है। अंत में चुनावों के समय अगर हरियाणा के चुनाव नहीं होते तो राजघाट के ऊपर उनको जगह नहीं मिलती। मैं कहना चाहता हूं कि वे किसानों के बड़े नेता हैं। ···(व्यवधान)···हरियाणा में चुनाव नहीं होता तो उन्हें राजघाट में स्थान दाह संस्कार के लिए नहीं मिलना था।

अध्यक्ष महोदय : कभी-कभी तो अकल से काम कर लीजिए।···(व्यवधान)···

श्री सी० जंगा रेड्डी : वे ग्रामों के विकास को ही देश का विकास मानने वाले व्यक्ति थे। किसानों के लिए वे अपनी जान देने के लिए तैयार रहते थे। मैं अपनी और अपनी पार्टी की ओर से उनके परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट करता हूं और श्रद्धांजलि अर्पण करता हूं।

[अनुवाद]

श्री मीयूस तिरकी (अलीपुरद्वार) : मैं अपने दल आर० एस० पी० की ओर से चौधरी चरण सिंह के प्रति सभा में अर्पित की गई श्रद्धांजलि में सम्मिलित होता हूं और अपनी ओर से भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मूलतः भारत एक कृषि प्रधान देश है और काफी संख्या में यहां के लोग किसान हैं। चौधरी साहब एक महान किसान नेता थे। दूसरे शब्दों में वह देश के सच्चे नेता थे। उनके निधन से करोड़ों किसान अपनी बात सरकार तक नहीं पहुंचा सकेंगे। इनके निधन से जो शून्य पैदा हुआ है। वह भविष्य में वर्षों तक खाली रहेगा। जो मर जाते हैं, वापस कभी नहीं आते हैं। लेकिन उनके आदर्श हमारे सामने हैं। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यह होगी कि हम उनके दिखाए हुए मार्ग पर चलें और उनके आदर्शों का पालन करें।

श्री वी० किशोर चन्द्र एस० देव (पार्वतीपुरम) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल और अपनी ओर से दिवंगत नेता चौधरी चरण सिंह और इस सभा के अन्य माननीय सदस्यों के प्रति व्यक्त की गई संवेदनाओं और श्रद्धांजलि से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन्, चौधरी चरण सिंह एक साधारण हैसियत से देश के उच्चतम पद तक पहुंचे। उनके रहन-सहन का ढंग अनोखा था और वह एक ईमानदार व्यक्ति थे। श्रीमन्, आपके माध्यम से, मैं चौधरी चरण सिंह और अन्य दिवंगत साथियों के दुःखी परिवारों को अपनी संवेदनाएं प्रेषित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : हमें इन मित्रों के निधन का भारी दुःख है और मैं आशा करता हूं कि सभा भी मेरे साथ शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदनाएं भेजेगी। अब सदस्यगण शोक प्रकट करने के लिए थोड़ी देर के लिए मौन खड़े होंगे।

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े हुए।

अध्यक्ष महोदय : सभा अब इन दिवंगत नेताओं के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए स्थगित होती है और 28 जुलाई, 1987 को 11 बजे म० पू० पर पुनः समवेत होगी।

11.42 म० पू०

तत्पश्चात् लोक सभा मंगलवार 28 जुलाई, 1987,
6 श्रावण, 1909 (शक) के ग्यारह बजे
म० पू० तक के लिए स्थगित हुई।

ऐ० जे० प्रिंटर्स, 5 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002